

ई- पाठशाला

कक्षा -12th / राजनीतिक विज्ञान

भारतीय राजनीति नए बदलाव ONE SHOT

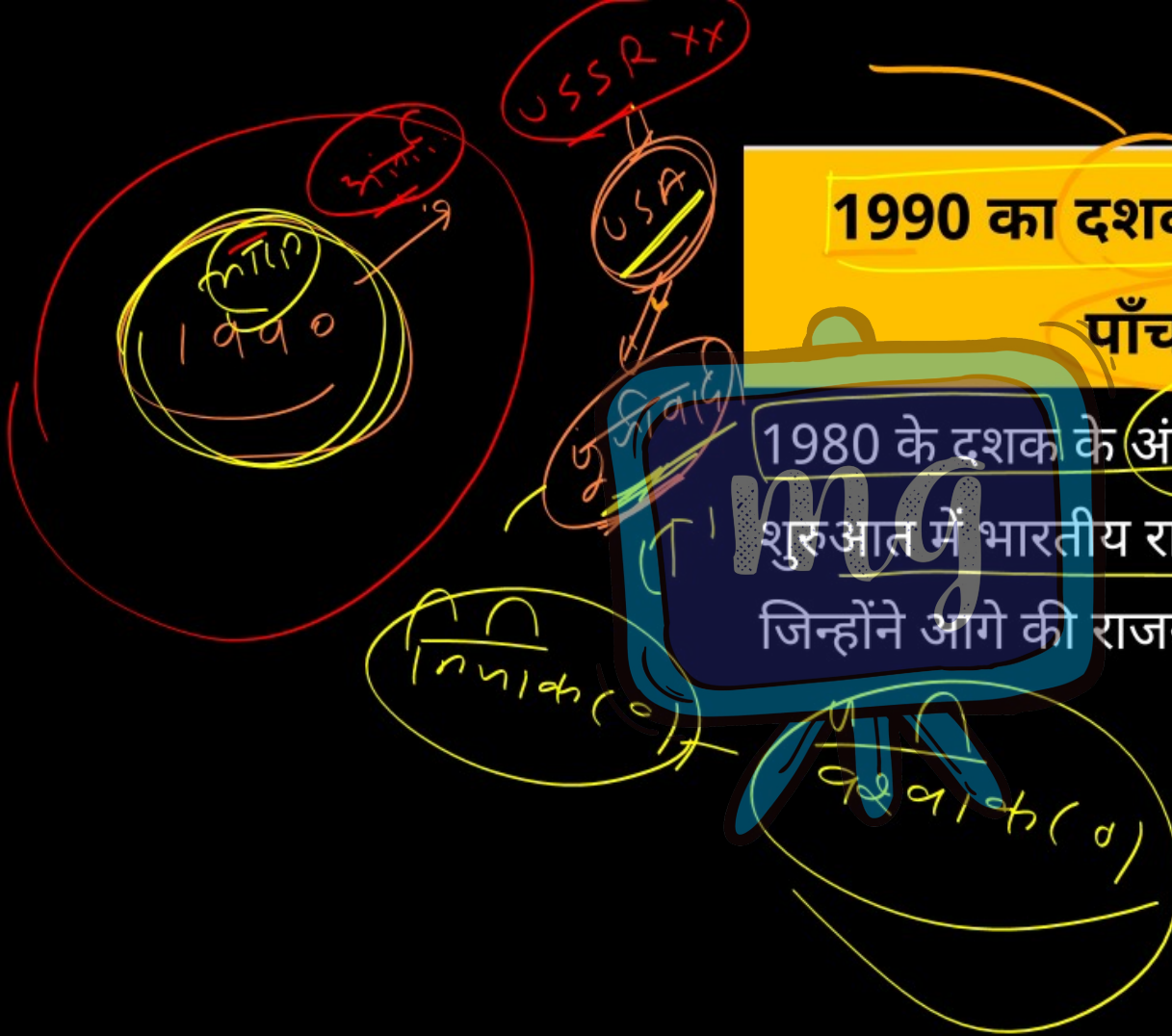
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...

LIVE | 06 OCT | 6:30 PM



1990 का दशक : भारतीय राजनीति में पाँच बड़े बदलाव

1980 के दशक के अंतिम वर्षों और 1990 के दशक की शुरुआत में भारतीय राजनीति में ऐसे बड़े परिवर्तन हुए जिन्होंने आगे की राजनीति की दिशा बदल दी।



a
(5)

प्रमुख बदलाव	मुख्य तथ्य
1 कांग्रेस प्रणाली का अंत	1984 में कांग्रेस 415 सीटें जीती; 1989 में घटकर 197 सीटें रह गई। 1989 के साथ कांग्रेस की पूर्व जैसी दलीय प्रमुखता समाप्त हुई।
2 मंडल मुद्दे का उदय	1990 में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू किया और केंद्रीय नौकरियों में OBC आरक्षण का प्रावधान किया।
3 नई आर्थिक नीति	आर्थिक नीतियों में बुनियादी बदलाव; इन्हें ढाँचागत समायोजन कार्यक्रम/नए आर्थिक सुधार कहा गया। 1991 तक बदलाव बड़े पैमाने पर प्रकट हुए।



प्रमुख बदलाव	मुख्य तथ्य
अयोध्या मुद्दा	राम जन्मभूमि से जुड़े विधिक एवं राजनीतिक विवाद ने राजनीति तथा धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र की बहस को प्रभावित किया।
राजीव गाँधी की हत्या	मई 1991 में हत्या के बाद कांग्रेस नेतृत्व में परिवर्तन; 1991 के चुनावों के बाद नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री बने।

मंडल और आर्थिक सुधार संबंधी बदलावों का विवरण स्रोत में स्पष्ट रूप से 1990-91 की राजनीति के केंद्रीय परिवर्तन के रूप में दिया गया है। राजीव गाँधी की हत्या और कांग्रेस नेतृत्व परिवर्तन का विवरण भी इसी क्रम का अंतिम बड़ा बदलाव है।

Flowchart

1989 कांग्रेस की हार

कांग्रेस प्रणाली की पूर्व प्रमुखता का अंत

मंडल राजनीति + नई आर्थिक नीति + अयोध्या मुद्दा

बहुदलीय प्रतिस्पर्धा

गठबंधन राजनीति का विस्तार

गठबंधन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1984 में कांग्रेस ने लोकसभा की कितनी सीटें जीतीं?

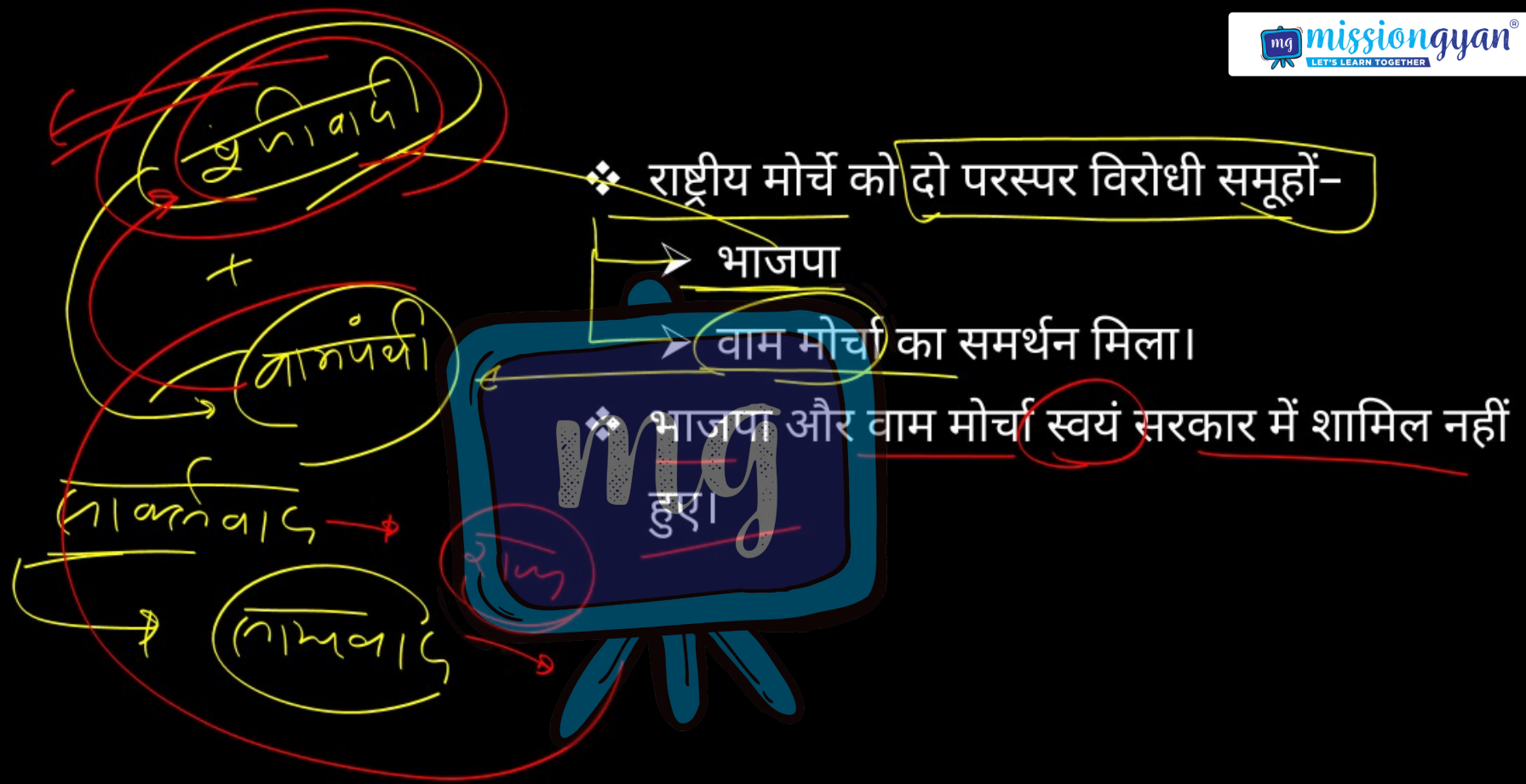
[RBSE-2022, Model Paper-2024]



गठबंधन का युग

I. 1989 का निर्णायक चुनाव

- ❖ 1989 में कांग्रेस की हार हुई।
- ❖ फिर भी कांग्रेस लोकसभा की सबसे बड़ी पार्टी थी।
- ❖ बहुमत न होने के कारण कांग्रेस ने विपक्ष में बैठने का निर्णय किया।
- ❖ राष्ट्रीय मोर्चा में जनता दल और कुछ क्षेत्रीय दल शामिल थे।



II कांग्रेस के दबदबे का अंत

- ❖ कांग्रेस की हार से दलीय व्यवस्था में उसका पुराना दबदबा समाप्त हुआ।
- ❖ इसका अर्थ यह नहीं था कि उसकी जगह कोई दूसरी पार्टी तुरंत प्रभुत्वशाली बन गई।
- ❖ परिणामतः बहुदलीय शासन-प्रणाली का नया दौर शुरू हुआ।
- ❖ 1989 से 2014 तक लोकसभा में किसी एक पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला।
- ❖ गठबंधन सरकारों के निर्माण में क्षेत्रीय दलों की भूमिका बढ़ी।
- ❖ 2014 और 2019 में भाजपा को अकेले बहुमत प्राप्त हुआ।

Smart Art

कांग्रेस का प्रभुत्व

- कांग्रेस की शक्ति में कमी
- एकल विकल्प का अभाव
- कई दलों का उदय
- क्षेत्रीय दलों का बढ़ता महत्त्व
- गठबंधन सरकारें

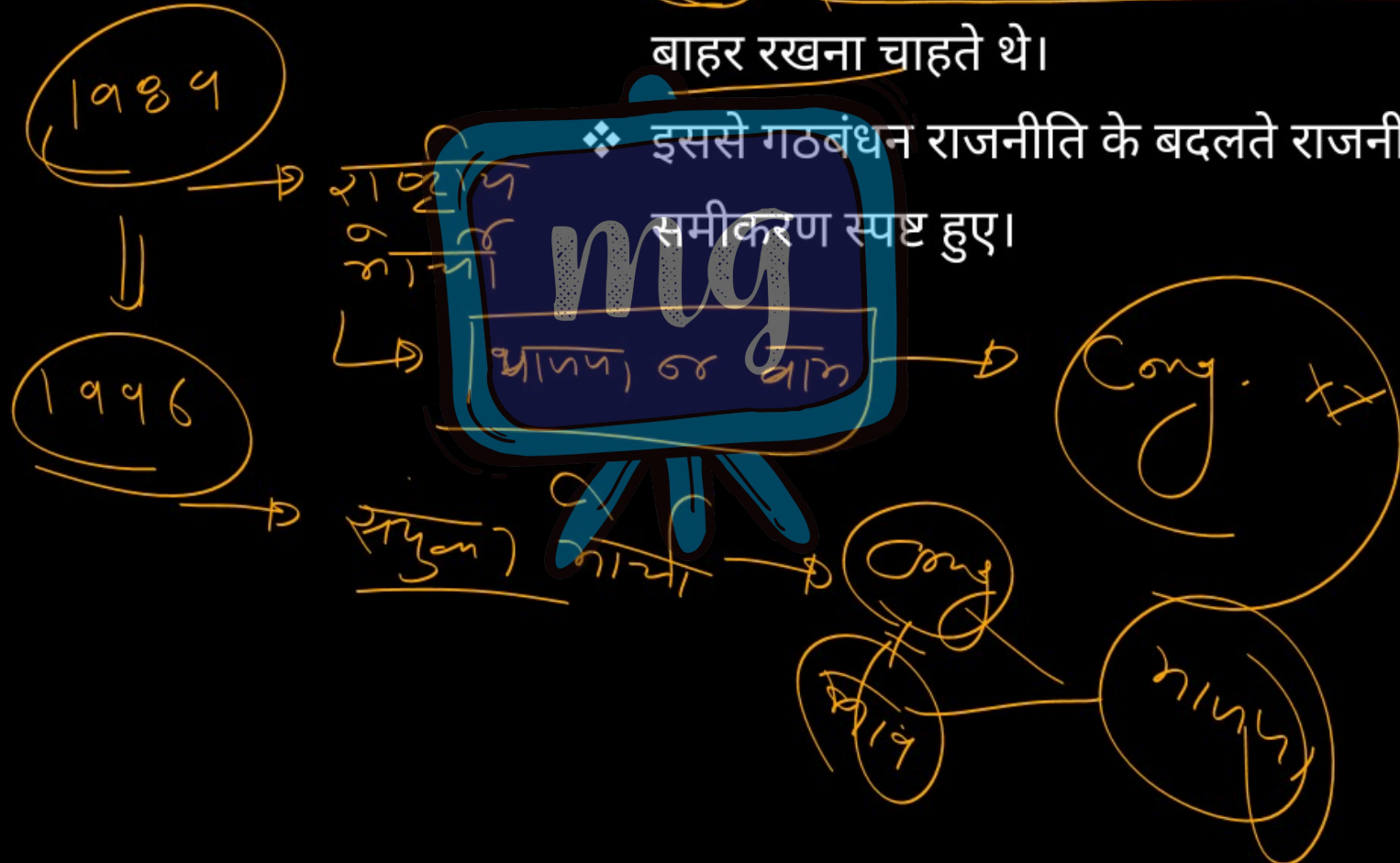
III. गठबंधन की राजनीति

A. प्रमुख विशेषताएँ

- ❖ नब्बे के दशक में दलित, OBC और क्षेत्रीय आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले दलों और आंदोलनों का उभार हुआ।
- ❖ 1996 की संयुक्त मोर्चा सरकार में जनता दल तथा कई क्षेत्रीय पार्टियाँ शामिल थीं।
- ❖ संयुक्त मोर्चा को इस बार कांग्रेस का समर्थन मिला।
- ❖ 1989 में भाजपा और वाम मोर्चा कांग्रेस को सत्ता से बाहर रखना चाहते थे।

❖ 1996 में कांग्रेस और वाम मोर्चा भाजपा को सत्ता से बाहर रखना चाहते थे।

❖ इससे गठबंधन राजनीति के बदलते राजनीतिक समीकरण स्पष्ट हुए।



B. भाजपा का उभार

❖ भाजपा ने 1991 और 1996 के चुनावों में अपनी स्थिति मजबूत की।

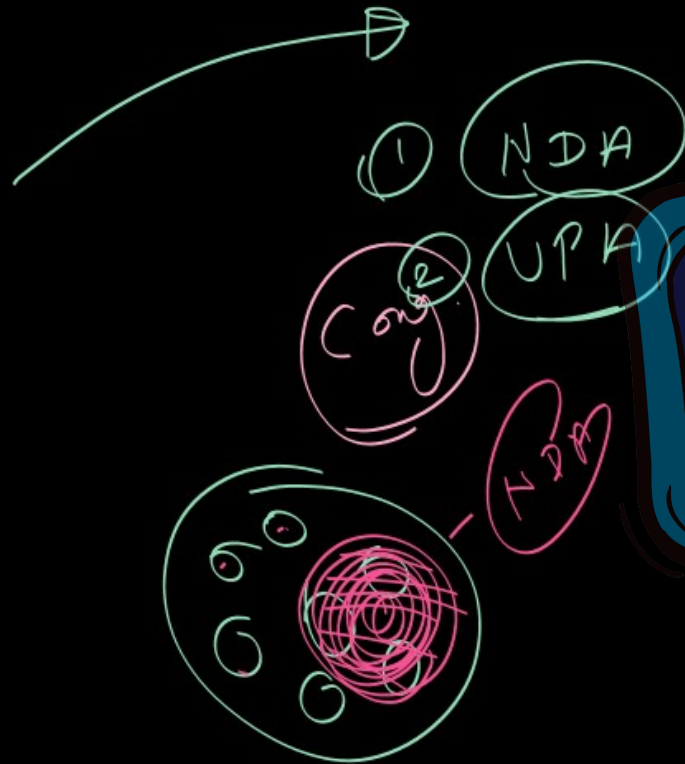
❖ 1996 में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनी।

सरकार बनाने का अवसर मिला, लेकिन लोकसभा में बहुमत हासिल नहीं कर सकी।

❖ बाद में भाजपा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन—राजग की अगुआ बनी।

❖ 1998 में सत्ता में आई।

❖ 1999 में राजग पुनः सत्ता में आया।



❖ दोनों सरकारों में अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने।

❖ 1999 की राजग सरकार ने अपना निर्धारित कार्यकाल पूरा किया।





अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

भारत में गठबंधन राजनीति का दौर कब शुरू हुआ?

[Model Paper-2025]

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1989 की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को किन दो विरोधी
राजनीतिक समूहों ने समर्थन दिया?

[RBSE-2022]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

राजग का पूरा नाम लिखिए।

[Model Paper-2025]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1989 में सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद विपक्ष में
कौन-सी पार्टी बैठी?

[Model Paper-2026]



लघूत्तरात्मक प्रश्न

भारत में गठबंधन राजनीति के दो प्रभाव बताइए।

[RBSE-2024]



लघूत्तरात्मक प्रश्न

1989 के बाद गठबंधन राजनीति प्रभावी क्यों रही?

[RBSE-2025, Model Paper-2026]



लघूत्तरात्मक प्रश्न

भारत में गठबंधन की राजनीति पर टिप्पणी कीजिए।

[Model Paper-2025]



निबंधात्मक प्रश्न

नब्बे के दशक से गठबंधन राजनीति की विवेचना

[RBSE-2026]



1989 के बाद केंद्रीय सरकारें		
प्रधानमंत्री	अवधि	सरकार/समर्थन
वी.पी. सिंह	दिसंबर 1989-नवंबर 1990	राष्ट्रीय मोर्चा; वाम मोर्चा और भाजपा का समर्थन
चंद्र शेखर	नवंबर 1990-जून 1991	समाजवादी जनता पार्टी के नेतृत्व वाला धड़ा; कांग्रेस का समर्थन
पी. वी. नरसिम्हा राव	जून 1991-मई 1996	कांग्रेस; एआईडीएमके और कुछ अन्य दलों का समर्थन
पी. वी. नरसिम्हा राव	जून 1991-मई 1996	कांग्रेस; एआईडीएमके और कुछ अन्य दलों का समर्थन
अटल बिहारी वाजपेयी	मई 1996-जून 1996	भाजपा की अल्पमत सरकार

1989 के बाद केंद्रीय सरकारें		
प्रधानमंत्री	अवधि	सरकार/समर्थन
एच. डी. देवेगौड़ा	जून 1996-अप्रैल 1997	कांग्रेस समर्थित संयुक्त मोर्चा
इंद्रकुमार गुजराल	अप्रैल 1997-मार्च 1998	कांग्रेस समर्थित संयुक्त मोर्चा
अटल बिहारी वाजपेयी	मार्च 1998-मई 2004	भाजपा-नीत राजग
मनमोहन सिंह	मई 2004-मई 2014	कांग्रेस-नीत संप्रग
नरेंद्र मोदी	मई 2014 के बाद	भाजपा-नीत राजग

निष्कर्ष

1989 के चुनाव → गठबंधन राजनीति के लंबे दौर की

शुरुआत

❖ सरकारें या तो गठबंधन सरकारें थीं,
अथवा दूसरे दलों के समर्थन पर टिकी अल्पमत
सरकारें।

❖ क्षेत्रीय पार्टियों की साझेदारी/समर्थन केंद्रीय राजनीति
में अत्यंत महत्वपूर्ण बना।

रिक्त स्थान

2004 के लोकसभा चुनाव के बाद _____

गठबंधन की सरकार बनी।

[RBSE-2023]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1989 की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के प्रधानमंत्री कौन थे?

[RBSE-2023, RBSE-2025]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

मार्च 1998 की भाजपा-नीत राजग सरकार का नेतृत्व

[Model Paper-2026]



अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) का राजनीतिक उदय

I. OBC का अर्थ

अन्य पिछड़ा वर्ग / Other Backward Classes

- ❖ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति से अलग प्रशासनिक कोटि।
- ❖ इसमें शैक्षणिक और सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों की गणना की जाती है।
- ❖ इन्हें पिछड़ा वर्ग भी कहा जाता है।

II. राजनीतिक पृष्ठभूमि

- ❖ पिछड़ी जातियों के अनेक तबकों का कांग्रेस के प्रति समर्थन कम हुआ।
- ❖ इससे गैर-कांग्रेसी दलों के लिए राजनीतिक अवसर पैदा हुआ।
- ❖ जनता पार्टी के विभिन्न घटकों का ग्रामीण OBC समुदायों में मजबूत जनाधार था।

III. 'मंडल' का लागू होना

क्रम

OBC राजनीतिक समूह

जनता दल द्वारा एकजुटता

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार

मंडल आयोग की सिफारिश लागू

आरक्षण पर तीखा विवाद

OBC राजनीतिक पहचान अधिक मजबूत

1989

राजनीतिक प्रभाव

- ❖ OBC राजनीति को सुगठित रूप मिला।
- ❖ आरक्षण विवाद के कारण OBC समुदाय अपनी राजनीतिक पहचान को लेकर अधिक सजग हुआ।
- ❖ रोजगार और शिक्षा में बेहतर अवसर की माँग बढ़ी।
- ❖ सत्ता में OBC की हिस्सेदारी का प्रश्न उठा।
- ❖ शासन में समुचित प्रतिनिधित्व की माँग को लोकतांत्रिक कदम माना गया।

IV. मंडल आयोग

A. गठन

- ❖ केंद्र सरकार ने 1978 में आयोग गठित किया।
- ❖ आधिकारिक नाम — दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग
- ❖ अध्यक्ष — बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल
- ❖ सामान्य नाम — मंडल आयोग।

1978

जन.
दल

1989

B. उद्देश्य

- ❖ सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ेपन की व्यापकता का पता लगाना।
- ❖ पिछड़े वर्गों की पहचान के तरीके बताना।
- ❖ पिछड़ेपन को दूर करने के उपाय सुझाना।

C. सिफारिशें

❖ आयोग ने 1980 में सिफारिशें प्रस्तुत कीं।

❖ शिक्षा संस्थानों और सरकारी नौकरियों में पिछड़ी जातियों की मौजूदगी बहुत कम पाई।

❖ इन समूहों के लिए 27% सीटें आरक्षित करने की सिफारिश।

❖ अन्य उपायों में भूमि-सुधार भी शामिल।

V मंडल आयोग का क्रियान्वयन

- ❖ अगस्त 1990 — राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने एक प्रमुख सिफारिश लागू करने का फैसला किया।
- ❖ केंद्रीय सरकार और उसके उपक्रमों की नौकरियों में OBC को आरक्षण।
- ❖ उत्तर भारत के कई शहरों में हिंसक विरोध।
- ❖ निर्णय सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दिया गया।
- ❖ मामला — इंदिरा साहनी केस।
- ❖ नवंबर 1992 — सर्वोच्च न्यायालय ने सरकारी निर्णय को सही ठहराया।
- ❖ क्रियान्वयन के तरीके पर मतभेद के बावजूद प्रमुख दलों में OBC आरक्षण पर सहमति थी।

रिक्त स्थान

1990 में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने _____ आयोग

की सिफारिशें लागू कीं।

[RBSE-2022]



रिक्त स्थान

मंडल आयोग का अध्यक्ष _____ को बनाया

गया।

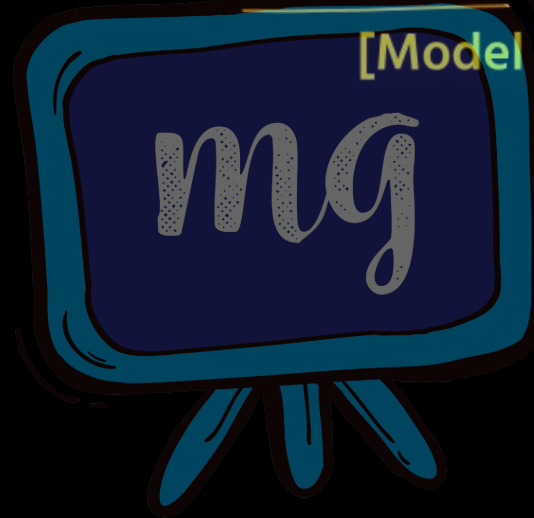
[RBSE-2026]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

मंडल आयोग के अध्यक्ष कौन थे?

[Model Paper-2023, Model Paper-2024]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

मंडल आयोग ने OBC के लिए कितने प्रतिशत
आरक्षण की सिफारिश की?

[Model Paper-2026]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

मंडल आयोग ने पिछड़ी जातियों के लिए क्या

सिफारिश की?

mg

[RBSE-2023]

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

OBC आरक्षण की सिफारिश किस आयोग ने की?



[RBSE-2025]

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

कर्पूरी ठाकुर किस राज्य के मुख्यमंत्री थे?



[RBSE-2026]

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

मंडल आयोग की प्रमुख सिफारिशें बताइए।

[Model Paper-2023, RBSE-2024]



दलित राजनीति का उभार

I. बामसेफ

- ❖ 1978 में बामसेफ का गठन।
- ❖ पूरा नाम — बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटीज एम्प्लाइज फेडरेशन।
- ❖ यह केवल साधारण ट्रेड यूनियन नहीं था।
- ❖ इसने 'बहुजन' की राजनीतिक सत्ता की वकालत की।

'बहुजन' में शामिल

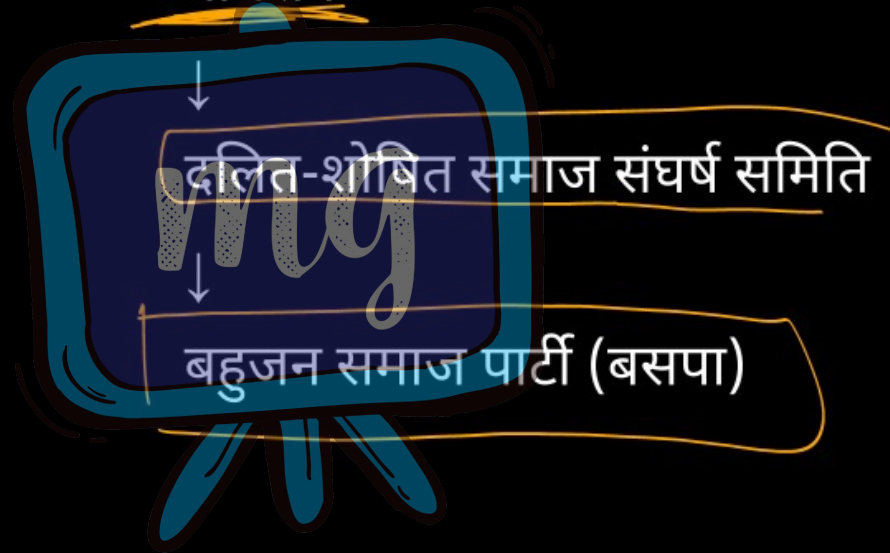
अनुसूचित जाति + अनुसूचित जनजाति + OBC +
अल्पसंख्यक

SC
ST
OBC

अल्पसंख्यक

II. संगठनात्मक विकास

बामसेफ



- ✓ ❖ बसपा की अगुआई कांशीराम ने की।
- ✓ ❖ प्रारंभ में पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में दलित मतदाताओं का समर्थन।
- ❖ 1989 और 1991 में उत्तर प्रदेश में चुनावी सफलता।
- ❖ दलित मतदाताओं के समर्थन पर आधारित महत्वपूर्ण राजनीतिक सफलता का नया उदाहरण सामने आया।

❖ **III. कांशीराम**

- ❖ बहुजन समाज के सशक्तीकरण के प्रतिपादक।
- ❖ बसपा के संस्थापक।
- ❖ सामाजिक-राजनीतिक कार्य के लिए केंद्र सरकार की नौकरी छोड़ी।
- ❖ बामसेफ → डीएस-4 → 1984 में बसपा की स्थापना।
- ❖ राजनीतिक सत्ता को सामाजिक समानता का आधार मानते थे।
- ❖ उत्तर भारत में दलित राजनीति के संगठनकर्ता।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

बामसेफ का गठन कब हुआ?

[RBSE-2024, RBSE-2025]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कौन थे?

[RBSE-2022]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

BAMCEF का प्रमुख उद्देश्य क्या था?

[RBSE-2022]



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

‘बहुजन’ से क्या अभिप्राय है?



[RBSE-2025]

लघूत्तरात्मक प्रश्न

बामसेफ पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

[RBSE-2023]



सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र

I. प्रमुख परिवर्तनविभाजन

इस दौर में धार्मिक पहचान पर आधारित राजनीति के प्रत्यक्ष उदय ने धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र की बहस को नई दिशा दी।

वैशाल 9

*5-

II. भाजपा का गठन एवं विचारधारा

❖ जनता पार्टी के पतन के बाद पूर्व जनसंघ समर्थकों ने

1980 में भाजपा बनाई।

❖ प्रारंभ में—

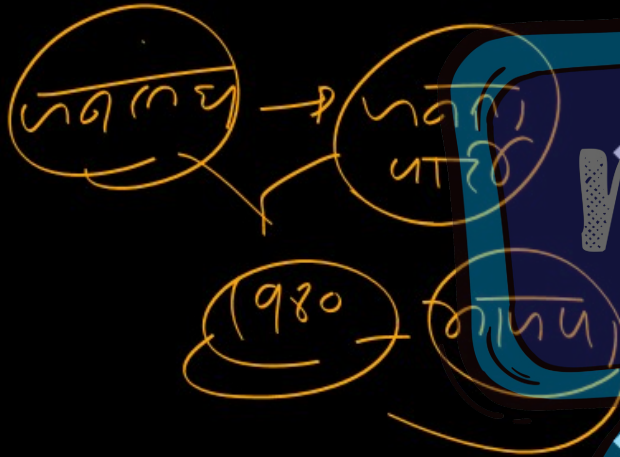
➤ गांधीवादी समाजवाद

➤ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपनाया।

❖ 1984 में चुनावी सफलता सीमित रही।

❖ 1986 के बाद राष्ट्रवाद पर अधिक जोर।

❖ राजनीतिक लामबंदी में हिंदुत्व की राजनीति को अपनाया।



III. हिंदुत्व

स्रोत के अनुसार विनायक दामोदर सावरकर ने हिंदुत्व को भारतीय राष्ट्रियता के आधार के रूप में लोकप्रिय किया।

मुख्य धारणा:

भारतभूमि = पितृभूमि + पुण्यभूमि

❖ एक सुदृढ़ राष्ट्र के लिए संगठित राष्ट्रीय संस्कृति को आधार माना गया।

हिंदुत्व
→

IV. शाहबानो मामला

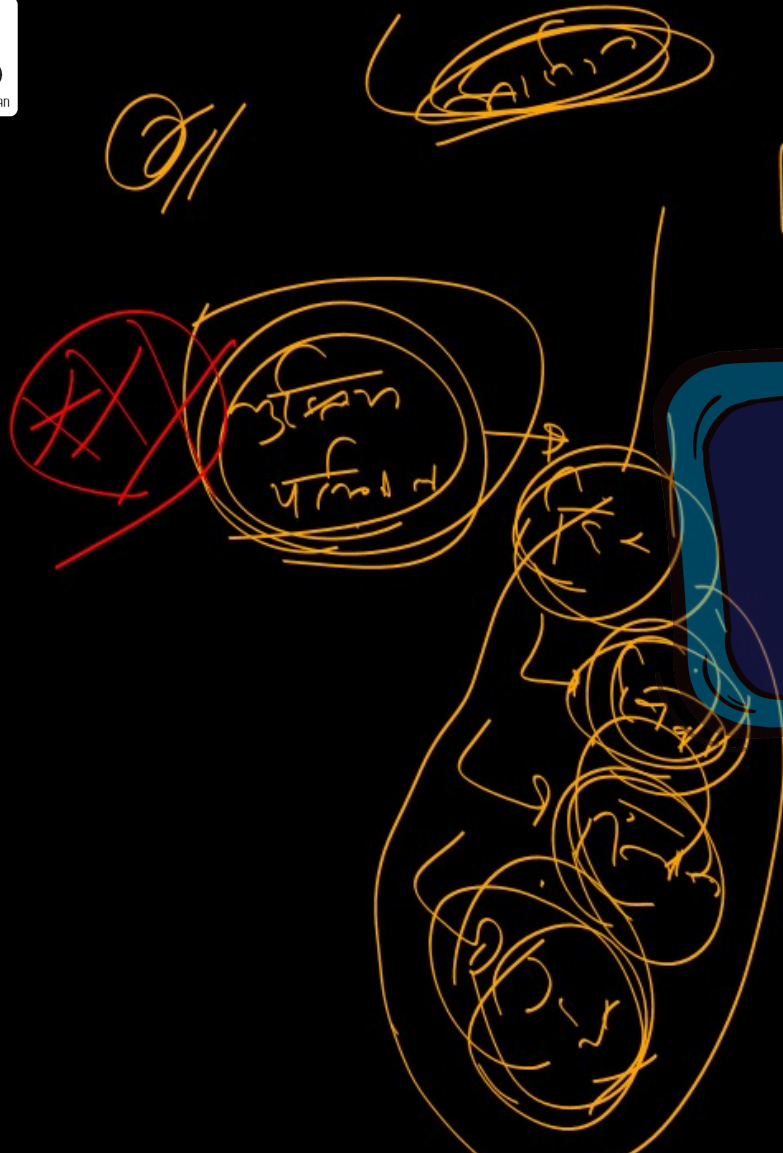
❖ मामला 1985 का।

❖ 62 वर्षीय तलाकशुदा मुस्लिम महिला ने पूर्व पति से गुजारा भत्ता माँगा।

❖ सर्वोच्च न्यायालय ने शाहबानो के पक्ष में फैसला दिया।

❖ कुछ पुरातनपंथी मुस्लिम समूहों ने इसे मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप माना।

❖ सरकार ने मुस्लिम महिला (तलाक से जुड़े अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 1986 पारित किया।



- ❖ इससे सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय निरस्त हुआ।
- ❖ कई महिला संगठनों, मुस्लिम समूहों और बुद्धिजीवियों ने इसका विरोध किया।
- ❖ भाजपा ने इसे अल्पसंख्यक तुष्टिकरण कहकर कांग्रेस सरकार की आलोचना की।



V. अयोध्या विषय

A. B प्रमुख घटनाक्रम

❖ 1949

→ न्यायिक प्रक्रिया के कारण ढाँचा सील।

❖ 1986

→ फैजाबाद जिला न्यायालय के निर्णय से ताला खुला।

❖ → पूजा की अनुमति।

❖ 1992

❖ → तीन-गुम्बद ढाँचे का ध्वंस।

❖ → कुछ आलोचकों के अनुसार भारतीय लोकतंत्र के सिद्धांतों के सामने बड़ी चुनौती।

❖ 9 नवंबर 2019

❖ → सर्वोच्च न्यायालय की संवैधानिक पीठ का 5-0 निर्णय।

B. 2019 के निर्णय के प्रमुख बिंदु

- ❖ विवादित स्थल श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को राम मंदिर निर्माण के लिए आवंटित।
- ❖ सरकार को सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड के लिए मस्जिद निर्माण हेतु उपयुक्त भूमि देने का आदेश।
- ❖ समाधान को विधि की उचित प्रक्रिया और संविधान की समावेशी भावना के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया।
- ❖ अध्याय इसे संवेदनशील विवाद के समाधान और लोकतांत्रिक परिपक्वता के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

तलाक से जुड़े अधिकारों के लिए मुस्लिम महिला

अधिनियम कब पारित हुआ? [Model Paper-2026]



एक नई सहमति का उदय

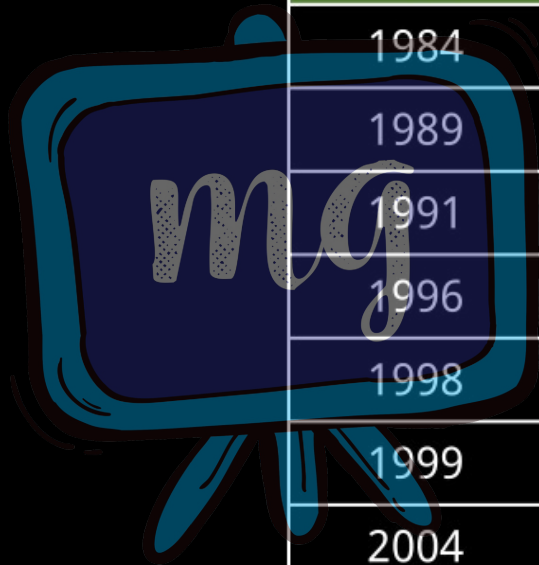
1989 के बाद की राजनीति को स्रोत कभी-कभी—

कांग्रेस का पतन + भाजपा का अभ्युदय के रूप में
देखता है।



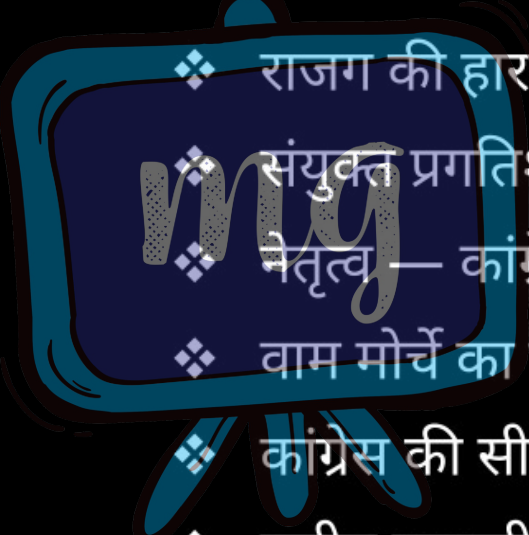
चुनावी बदलाव का संक्षिप्त चित्र

वर्ष	कांग्रेस सीटें	भाजपा सीटें
1984	415	2
1989	197	85
1991	232	120
1996	140	160
1998	141	182
1999	114	182
2004	145	138
2009	206	116
2014	44	282
2019	52	303



I. लोकसभा चुनाव : 2004-2019

2004

- 
- ❖ राजग की हार।
 - ❖ संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन—संप्रग की सरकार।
 - ❖ नेतृत्व — कांग्रेस।
 - ❖ वाम मोर्चे का समर्थन।
 - ❖ कांग्रेस की सीटों में 1991 के बाद पहली बार वृद्धि।
 - ❖ दलीय प्रणाली में बड़ा परिवर्तन स्पष्ट हुआ।

2009

- ❖ जुलाई 2008 में वाम दलों ने भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के मुद्दे पर समर्थन वापस लिया।
- ❖ इसके बावजूद संप्रग सरकार ने कार्यकाल पूरा किया।
- ❖ कांग्रेस की सीटें:
 - 2004 → 145
 - 2009 → 206
- ❖ मनमोहन सिंह दूसरी बार प्रधानमंत्री बने।

2014

- ❖ भाजपा ने नरेंद्र मोदी को सितंबर 2013 में प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया।
- ❖ 2014 में भाजपा ने 282 सीटें जीतीं।
- ❖ 30 साल बाद किसी एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिला।
- ❖ पूर्ण बहुमत के बावजूद भाजपा ने गठबंधन सहयोगियों के साथ राजग सरकार बनाई।

2019

❖ भाजपा ने 303 सीटें जीतीं।

❖ पूर्ण बहुमत के बावजूद अध्याय में गठबंधन राजनीति की प्रासंगिकता को कायम बताया गया है।



II.. बढ़ती सहमति — चार प्रमुख क्षेत्र

राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और संघर्ष के बावजूद अधिकांश दलों के बीच चार मुद्दों पर व्यापक सहमति उभरी।

A. नई आर्थिक नीति पर सहमति

- ❖ कुछ समूह विरोधी।
- ❖ लेकिन अधिकांश राजनीतिक दल नई आर्थिक नीतियों के समर्थक।
- ❖ धारणा — नई आर्थिक नीतियों से देश समृद्ध होगा और भारत विश्व की आर्थिक शक्ति बनेगा।

B. पिछड़ी जातियों के सामाजिक-राजनीतिक दावों की स्वीकृति

- ❖ पिछड़ी जातियों के दावों को स्वीकार करने की आवश्यकता मानी गई।
- ❖ शिक्षा और रोजगार में आरक्षण का समर्थन।
- ❖ OBC को सत्ता में समुचित हिस्सेदारी देने की स्वीकृति।

C. प्रांतीय दलों की भूमिका की स्वीकृति

❖ राष्ट्रीय और प्रांतीय दलों का अंतर लगातार कम हुआ।

❖ प्रांतीय दल केंद्रीय सरकार में साझीदार बने।
देश की राजनीति में उनका महत्त्व बढ़ा।

D. विचारधारा की अपेक्षा कार्यसिद्धि पर जोर

- ❖ राजनीतिक दलों ने कई बार विचारधारागत अंतर के बावजूद गठबंधन बनाए।
- ❖ सत्ता में हिस्सेदारी राजनीतिक गठजोड़ का महत्वपूर्ण आधार बनी।
- ❖ उदाहरणतः कई दल भाजपा की हिंदुत्व विचारधारा से सहमत न होने के बावजूद भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन में शामिल हुए।

III. भारतीय राजनीति की समग्र दिशा

परिवर्तन

एक प्रभावशाली पार्टी का प्रभुत्व



कांग्रेस की अग्रणी स्थिति को चुनौती



बहुदलीय प्रतिस्पर्धा



क्षेत्रीय दलों का उभार



गठबंधन राजनीति



कांग्रेस-नीत एवं भाजपा-नीत गठबंधनों की प्रतिस्पर्धा



कुछ प्रमुख मुद्दों पर व्यापक सहमति



IV. जन आंदोलनों की भूमिका

राजनीतिक दलों की प्रतिस्पर्धा और सहमति के साथ-साथ जन आंदोलन निम्न मुद्दों को राजनीतिक एजेंडे में

ला रहे हैं:

❖ गरीबी

❖ विस्थापन

❖ न्यूनतम मजदूरी

❖ आजीविका

❖ सामाजिक सुरक्षा

❖ जाति के संदर्भ में न्याय

❖ लिंग के संदर्भ में न्याय

❖ वर्ग के संदर्भ में न्याय

❖ क्षेत्र के संदर्भ में न्याय

❖ ये आंदोलन राज्य को उसकी जिम्मेदारियों के प्रति सचेत करते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

2004 के बाद उभरी व्यापक सहमति के कोई दो मुद्दे

[RBSE-2022]



निबंधात्मक प्रश्न

‘1989 के बाद महत्वपूर्ण मसलों पर अधिकतर दलों में व्यापक सहमति है।’ चार बिंदु स्पष्ट कीजिए।

[RBSE-2026]

